प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा
लाल-किला दिल्ली से दिया गया भाषण

टेप नं: 18223
18750
18751

दिनांक: १५-८-७१

(भाइयों) बहनों, बच्चों,

यह महीना अगस्त का हमारे राष्ट्र का एक महत्वपूर्ण महीना है। यह दिन आपको याद है हर साल हम यहां मिलते हैं, केवल एक दूसरे को देखने केलिए नहीं, लेकिन अपने झण्डे का अभिनन्दन करने। यह एक कपड़े का टुकड़ा है लेकिन हमारी आजादी का निशान है, हमारे बहादुर जो आजादी केलिए जिन्होंने जान दी है और आज देने को तैयार हैं उनका निशान है। हम और आप यहां पर लाल किले पर आते हैं और करोड़ों लोग जो यहां नहीं आ सकते, भारत के गांव और शहर में, अपने घरों में हैं या खेती में हैं या कारखाने में हैं या दफ्तर में हैं, वो सब भारत के नागरिक सब मिल के आज सोचते हैं कि कहां तक हमारा देश पहुंचा और कितना लम्बा सफर और हमारे आगे है। वैसे तो देश का सफर, देश की यात्रा, कभी भी खतम नहीं होती है। जितने ही और आगे बढ़ें उतना ही रास्ता और लम्बा होता है, उतना ही और करने को होता है। इस पिछले साल बहुत कुछ हमारे देश में हुआ।

पहले तो मैं आप सब को धन्यवाद देना चाहती हूं कि बहुत सी बातें जो कुछ लोग यहां हमारे देश में या देश के बाहर भारत के बारे में, भारत की जनता के बारे में, कहते थे उसको आपने झूठ साबित किया। आपने दिखाया कि हमारी जनता के कितने ही कष्ट और कठिनाईयां हों, वो अपनी ताकत को समझते हैं, वो अपने अधिकारों को समझते हैं। और इस बड़े चुनाव में, जैसा चुनाव दुनियां के किसी देश ने कभी देखा नहीं है, क्योंकि इतनी बड़ी जनसंख्या किसी देश की नहीं है जहां पे चुनाव होते हैं, आपने दिखाया कि चाहे धमकी हुई, चाहे डराये गये, चाहे मौसम खराब हुआ, आप चुनाव में गए, जहां पे जान का खतरा था वहां पे भी गए, और अपने राय, अपना मत, जाहिर किया। यह मत कोई व्यक्ति केलिए नहीं था, एक माने में कोई दल केलिए भी नहीं था।

यह मत था जो कार्यक्रम हमने आपके सामने रखा था। जो हमारी नीतियां इस लाल किले से मैंने आपके सामने रखीं और अनेक भारत के कोने कोने की जनता के सामने रखीं, उन नीतियों का, उन कार्यक्रमों का आपने साथ दिया। आपको मालूम है कि तब से हमने कुछ करने की कोशिश की। एक एक कर के जो बातें हमने आपके सामने रखी थीं, उनकी तरफ कदम उठाया गया है। यह मालूम है हमें कि यह काम जल्दी में नहीं हो सकता है, लेकिन पहले कदम तो जल्दी से उठ सकते हैं। और वो कदम हमने उठाये हैं। गरीबी तो एक भयंकर स्थिति है जो किसी भी देश को कमजोर करती है, उसमें निराशा लाती है। इसीलिए हमारा प्रथम काम है कि इस गरीबी को दूर करें और गरीबी दूर तब होगी जब एक वर्ग और दूसरे वर्ग के बीच में चाहे सामाजिक अनेकता हो, चाहे आर्थिक अनेकता हो उसको कम कर पायें। और इसीलिए हमने यह महत्वपूर्ण कदम उठायें हैं। जो रुकावटें हमारे सामने भी और हैं उनको हटाने की कोशिश में हम हैं। अभी पिछले पार्लियामेंट में हमने संविधान का संशोधन करने का एक बिल पास किया। कुछ लोगों को उससे घबराहट हुई, कुछ गलत प्रचार भी हुआ, कि शायद सब की ज़मीन ले ली जायेगी या दूसरी सम्पत्ति ली जायेगी। कुछ लोग, हमारे भाई और बहन जो अल्पसंख्या के हैं, उनको लगा कि शायद उनके अधिकार पर कुछ आंच आये। लेकिन यह मैंने पहले भी कहा है और फिर दोहराती हूं और पूरा आश्वासन देती हूं कि हम किसी से कुछ लेना नहीं चाहते हैं, हम केवल चाहते हैं कि जिन के पास बहुत ज्यादा है उस का लाभ जनता को मिले, देश को मिले। जिन के पास कुछ नहीं है कैसे हम उनको कुछ दें, जिसमें वो भी इस देश की ताकत को बढ़ा सकें। पहले भी सम्पत्ति पर, ज़मीन पर कुछ सीमा लगी है, अलग अलग प्रदेशों में अलग अलग है। हमारी आशा है कि सब जगह इस पे फिर से गौर हो के कुछ उचित कार्यवाही होगी। और दूसरे जो कानून ऐसे बनाने हैं जिसमें जो हमारे किसान भाई हैं, जो भूमिहीन हैं जो देहात के गरीब हैं, चाहे किसी भी जाति के हों, उनको कुछ थोड़ा सा आराम मिल सके और ग्राम्य जीवन में वो भी पूरा भाग लें। ग्राम को कैसे बदलें कैसे और अच्छा बनायें, इसमें वो भी हिस्सेदार बनें। इसी तरह से शहर की जायदाद पर भी सीमाबंदी करनी है, यह हमारा कार्यक्रम है। तो जितने हमारे कार्यक्रम हैं एक एक कर के उनको हम पूरा करने जा रहे हैं। कुछ हुआ है और कुछ बाकी है। अब चुनाव के बाद

हम सब यहां आपके प्रतिनिधि देहली में इकट्ठा हुए तो आपकी भी बहुत ऊंची आशाएं थीं और हमारी भी बहुत ऊंची आशायें थीं कि बहुत ही तेजी से आगे बढ़ सकेंगे। लेकिन एकदम से एक जो कल्पना भी नहीं करसक्ते थे, जिसमें ज़रा भी हमारा क़ुसूर नहीं, ऐसा एक बोझा हमारे और आपके ऊपर आ के पड़ा, लेकिन हम को मालुम है कि भारत की जनता ने अनेक बोझे उठाये हैं और अनेक बोझे आगे भी उठायेगी। हमको मालुम है कि यह शक्ति जो एक-एक नागरिक के अन्दर है, चाहे वो सिपाही हो, चाहे वो साधारण नागरिक हो, चाहे वो बूढ़ा हो, चाहे नौजवान हो और चाहे बालक हो, यह शक्ति हमको इन सब कठिनाइयों से पार कर के ले जायेगी। मुझे मालूम है बहुत सी बातें ऐसी हुई जिससे आपके मन में चिन्ता पैदा हुई है लेकिनबहुत सी बातें ऐसी भी हुई जिससे आपकी आशाएं बढ़ीं और शायद आपके दिल में गौरव भी आया कि हमारी जनता किस ढंग से, किस बहादुरी से, इन कठिनाइयों और इन बोझों का सामना करती है। हम एक दूसरे को मदद करते हैं, हम बाहर से भी मदद लेते हैं। लेकिन हम में से हरेक को अपने पैरों पे खड़ा होना है, हम में से हरेक जो भारत निवासी है उनको देखना है कि हम न केवल हम अपने अधिकारों की रक्षा करें बल्कि वो जिन की आवाज़ उठ नहीं सकती, जिन की आवाज़ राजधानी तक पहुंच नहीं सकती, उनके अधिकारों की भी रक्षा करना हमारी जिम्मेदारी है। केवल सरकार की नहीं, लेकिन प्रत्येक नागरिक की।

आज भी वो जो अनेकता हमारे समाज में थी, सदियों से थी, जिसने हमें बदनाम किया, जिसने हमको कमजोर किया, वो अनेकता गई नहीं है। आर्थिक अनेकता को तो आप अलग नहीं कर सक्ते, वो तो सरकार का ही काम है लेकिन सामाजिक अनेकता को आप दूर कर सकते हैं, अपनी भावना से, अपने रहन-सहन के तरीके से, अपने कार्य से। तो यह जिम्मेदारी भारत को एक बनाने की, भारत की जनता को मजबूत करने की यह सब जनता की एक बड़ी जिम्मेदारी है। एक दूसरी चिन्ता आप की और विशेषकर के जो मेरी बहनें हैं उनकी है, यह बढ़ती हुई कीमतों की। यह तो हम सब पर इसका असर पड़ता है और हमारी कोशिश होनी चाहिये कि जो आवश्यक वस्तुएं हैं उनकी कीमतें कम हों। लेकिन इसमें भी बहुत कुछ जिम्मेदारी आप ओढ़ सक्ते हैं। आप देखिये कारण क्या है कीमत

बढ़ने का। कभी कभी कोई किसी चीज़ की कमी होती है तो उसके दाम बढ़ते हैं और वो समझा जाता है। लेकिन कभी कभी एक वस्तु पे टैक्स लगता है लेकिन दूसरी वस्तुएँ जिनका ज़रा भी उससे सम्बन्ध नहीं है उस के दाम भी बढ़ जाते हैं। कौन बढ़ाता है, क्यूं बढ़ते हैं? यह सब आपको अपने अपने मोहल्ले में जांच करना है, आपको स्वयं संगठन बनाना है देखने को कि ऐसा नहीं हो। यह ज़िम्मेदारी चाहे कीमतों के बारे में हो, चाहे दूसरे बारे में, नागरिक की क्या ज़िम्मेदारी है यह प्रश्न हरेक को सोचना है, क्योंकि आपको मालूम है कि इस देश ने बहुत सी चुनौतियों का सामना किया है लेकिन शायद जो चुनौती आज हमारे सामने है, इतनी बड़ी कभी भी हमारे देश के सामने क्या किसी भी देश के सामने शायद नहीं आई होगी।

जहां तो हम कोशिश में हैं कि प्रत्येक नागरिक के अधिकार बढ़ें और वो अपने अधिकार उसको मिल सकें, वहां हमारी सीमा के दूसरे पार उसका उल्टा ही हुआ। जैसे हमारे यहां चुनाव हुआ वहां भी चुनाव हुआ। जैसे यहां पे सारी जनता निकली अपना मत देने, वैसे वहां भी हुआ। लेकिन जहां यहां पे हम कोशिश कर रहे हैं कि जो हमने आपसे कहा उसको पूरा करें, वहां एक दूसरी ही दुर्घटना हुई। एक भयंकर दुर्घटना, जिसके कारण ७५ लाख लोग ज़ख्मी, बीमार, भूखे, अपने घर, अपना देश, छोड़ के हमारे देश में, हमारी ज़मीन पर आ के बसे हैं। हमने अपने दरवाज़े हमेशा शरणार्थियों केलिए खुले रखे। लेकिन यह केवल शरणार्थी नहीं हैं, इनका जो आन्दोलन है वो एक बहुत महत्वपूर्ण आन्दोलन है, वही आन्दोलन जो हमने और आपने चलाया और दुनियां के बहुत से देशों ने चलाया कि वहां पे कैसे अपने अधिकार जनता को मिलें। हम आर यहां कीमत के बारे में बोलते हैं तो आज जो बंगला देश के लोग आये हैं क्या कीमत वो नहीं देंगे केवल अपनी जान केलिए, केवल अपने देश की स्वतंत्रता केलिए? तो आज बहुत ही बड़ी बड़ी बातों की तरफ हमको देखना है। यह कठिनाइयां हैं और इनको दूर करना है, इन से आंख बचानी नहीं है, इनको भुलाना नहीं है, जो कठिनाइयां हैं उनका सामना करना है। लेकिन साथ ही साथ अपनी आंखें यह दूर की बातों पे रखना है। और यह सोचना है कि क्या बात है हमारे भारत में जो हमारे चारों तरफ लोकतंत्र भंग हो गया, कितने देशों के संविधान अलग कर दिये गए, लेकिन हमारे पैर जमे हैं अपनी धरती पे, लोकतंत्र की नीति पर, अपने संविधान को असलीयत देने केलिए जनता केलिए, उसको लाभदायक बनाने केलिए। तो

यह जो हमारी परम्परा है, इसको हमको बचाना है । हमें देखना है कि हमारी आजादी भी मजबूत हो और हम में भी वो शक्ति आये कि हम ऐसी अपनी जो परम्परा है हमेशा उसको कायम रखें ।

आपको मालूम है कि हमारी नीति रही है, जैसे देश में सब लोगों को संग ले के चलने की, उसी तरह से हमारी विदेश नीति रही है, एक शांति की नीति । हम किसी से लड़ाई करना चाहते नहीं है, न हम तलवार दिखाते हैं, न ऐसे नारे निकालते हैं जिस में किसी को बुरा लगे सके । लेकिन आपको मालूम है यह क्यों, इसलिए कि हमको मालूम है कि हमारी असली ताकत जनता में है, हमारी असली ताकत है इस देश को मजबूत बनाने में, इसकी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में, इसकी सामाजिक नीति को सुधारने में और यह काम इस देश में जोरों से हो रहा है । तो हम न किसी को धमकी देते हैं, और न हम किसी की धमकी से डरते हैं । हम और आप अपने दिल में जानते हैं कि यह भारत किसी भी संकट और किसी भी स्थिति का सामना कर सकता है और जो भी होगा उसका सामना हम करेंगे । आज हम यहां जमा हुए हैं भारत माता को अभिनन्दन करने, वो भारत माता जिसने हम को जन्म दिया है, वो भारत माता जिसने हमें ऐसी परम्परा दी है कि हम और आप हरेक कठिनाई के बीच में सिर ऊपर कर के खड़े रह सकते हैं, हरेक कठिनाई और कष्ट के बीच में हम हिम्मत दिखा सकते हैं, हम पीछे नहीं हटते । तो यही भावना हमारी हमेशा होनी चाहिए और इसी दृष्टि से हमको हरेक बात को देखना है । इस साल भी यहां तो मौके से वर्षा रुकी, लेकिन आपको मालूम है कि बहुत जगह बाढ़ आया है हमारे देश में कई प्रान्तों में फिर से भयानक सूखा पड़ा है, कहीं कहीं पीने का पानी नहीं है, लेकिन यह सब होते हुए भी हमारा उत्पादन इतना हुआ है कि हमारी जनता के लिए वो काफी है । केवल दाल और तिलहन में कुछ कमी है । अनाज की कमी अब नहीं रही । लेकिन आपको मालूम है कि हमें केवल अपनी जनता को नहीं खिलाना है, अब एक बहुत बड़े दूसरे जनता को भी हम खिला रहे हैं ।

यहां पे नारे उठते हैं बंगला देश के बारे में, वहां के बड़े नेता उनके बारे में । आपको मालूम है कि यह एक ऐसा विषय है कि केवल भारत में नहीं लेकिन दुनिया में जहां भी स्वतंत्रता प्रेमी कोई है, मनुष्य जाति का प्रेमी कोई है उसका दिल इस समय चुप नहीं रह सकता है ।

लेकिन हर कदम जो उठाते हैं तो उसमें यह देखना है कि उस कदम से हम मजबूत होते हैं या नहीं । उस कदम से या उस नारे से हम उन लोगों को मजबूत करते हैं या नहीं । तो जो भी हम कदम उठायेंगे मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि इसी दृष्टिकोण से होगा कि हम जहां भी कोई स्वतंत्रता केलिए लड़े, जहां भी कोई अपने अधिकारों केलिए गरीब आदमी लड़े, जहां भी कोई मनुष्य जाति को ऊपर करने केलिए लड़े, तो भारत और भारत की जनता हमेशा उनके साथ रहेगी ।तालियां। यह समय है जब कितना भी बड़ा संकट आये तो हम को और आपको निराश नहीं होना है । पहले मैं तो समझती हूं कि कभी भी कारण नहीं था निराश होने का, लेकिन आज जब इतने बार जनता ने यह साबित किया है कि हम सामना कर सकते हैं इन चीजों का, हमको कष्ट होगा, हमको कुर्बानी देनी होगी, लेकिन हम सामना कर सकते हैं और करेंगे । तो यह विश्वास, यह आत्मविश्वास, जब हमारे मन में, हमारे हृदय में है तो कोई कारण नहीं है कि हम भविष्य से डरें । परिवर्तन की धारा तेजी से बह रही है हमारे देश में और सब देशों में और इस धारा से कोई बचा नहीं रह सकता है । सब को अपने लपेट में लेती है । हमारे देश को इस धारा से डरने की जरूरत नहीं है, क्योंकि हम इस धारा के संग संग तैर रहे हैं बल्कि हम इस धारा को एक दिशा दे रहे हैं । तो हमको मालुम है कि जो भी भविष्य में आये हम उसकेलिए तैयार रहेंगे। आज इस शुभ दिन पर जो हमारे नागरिक कष्ट में हैं, चाहे बाढ़ के कारण, चाहे सूखे के कारण, चाहे गरीबी के कारण, या दूसरे अन्याय के कारण, उनके संग हमारी पूरी सहानुभूति है । हम उनसे कहते हैं कि हिम्मत रखिये और आप हमारा साथ दीजिए और हम आपकी मदद करेंगे और सब मिल के इस प्यारे भारत को हम आगे बढ़ायेंगे । तो आप भारत की जनता, यह तैयार रहने का समय है, कष्ट केलिए तैयार, कठिनाई केलिए तैयार, खतरे केलिए तैयार जो भी हो उसकेलिए तैयार रहना है । भारत की जनता चाहे गरीब रही हो, चाहे अनपढ़, लेकिन एक ऐसा इतिहास हमारा रहा, ऐसे वीरों की भूमि यह रही, कि कोई कारण नहीं है कि हम आज पीछे हटें या हम डरें कि ठीक रास्ते पर हम नहीं चल रहे हैं । केवल एक बात का ध्यान रखना है कि यही जो परम्परा हमारी पुरानी रही, जो नीति हमारी पुरानी रही, धर्म-निरपेक्षता की, उस पर हम मजबूत रहें ।

मैंने आपसे कहा, कि हम सब लोगों से दोस्ती रखना चाहते हैं। अभी थोड़े ही दिन हुए सोवियत संघ से हमने एक संधि की। तो कुछ लोग समझते हैं कि इसके कारण हमारी नीति का परिवर्तन हुआ है। हमारी नीति का परिवर्तन नहीं हुआ। इसलिए कि वो नीति हमारे देश के लिए ठीक नीति है। इसलिए नहीं कि कोई पत्थर की लकीर बनाई है और उसको कभी नहीं बदल सकते लेकिन इसलिए कि चाहे पहले की हालत थी, चाहे आज की हालत है, उसमें भारत जैसे देश के लिए यही नीति ठीक है और हम देख रहे हैं कि आस्ते आस्ते सब देश चाहे कबूल करें चाहे नहीं इस नीति के तरफ वो भी आ रहे हैं और विशेष कर के जो हमारे जैसे देश हैं उनके लिए तो दूसरी कोई नीति लाभदायक हो ही नहीं सकती। तो हमने जो हमारी बुनियादी बातें हैं, [चाहे हमारी परम्परा में हों, चाहे हमारी आजकल की नीति में हों, जो बुनियादी बातें] उन पे तो हम को खड़ा रहना है। लेकिन बहुत सी बातें दूसरी जो होती हैं, कभी गलतियां होती हैं, कभी भूल होती है, उनको हमको हिम्मत से कहना है यह भूल हो गई, इसको हम बदलने को तैयार हैं। इसी तरह से कई परिवर्तन हमारी राष्ट्रीय नीति में आये हैं और शायद और करने हों जिसमें हम और जल्दी, और जोरों से, अपनी गरीब जनता की सहायता कर सकें, जिसमें वो अपने पैरों पे खड़े हों, और मजबूती से वो और हम इस देश को हरेक तरह से और शक्तिशाली बनायें। दुनिया के इतिहास ने यह हमें सिखाया कि बन्दूक की नाली से देश आगे नहीं बढ़ता है। देश आगे बढ़ेगा जब जनता की सेवा होगी, जब जनता मजबूत होगी, जब जनता की राय से देश चलेगा। हम इसी की कोशिश में हैं। और आप अपना साथ दें, और इस समय चाहे किसी भी दल के हों, चाहे कुछ भी आपकी राजनैतिक विचारधारा हो, यह समय है जब हम सब उठ कर के खड़े हो कर के कहें कि हम भारत के नागरिक हैं, हम भारत की रक्षा करेंगे, भारत की सीमा की रक्षा, भारत की एकता की रक्षा, भारत की अल्प-जातियों की रक्षा, भारत के गरीबों की रक्षा, भारत को हरेक तरह से मजबूत करेंगे। चाहे हमारा] निजी लाभ किसी भी नारे से हो, किसी भी कार्य से हो, हम उसको आज भूल जायेंगे और एक ही नारा होगा, वो है भारत निवासी एक हों, भारत निवासी हिम्मत रखो, भारत निवासी आगे बढ़ो। यह विचार रखें कि अगर हम यहां से जाएंगे तो कोई हमको रोक नहीं सकता, कोई हमको दबा नहीं सकता। तो मेरी बहनो और भाइयो, आपमें से कुछ यहां वर्दी में हैं और बहुत से बिना वर्दी के हैं लेकिन समझिए कि हम
~~और आप सब भारत के सिपाही हैं और हमको निश्चय करना है~~
कि कठिनाई आए तो खून बहाना हो तो खून बहाएंगे, पसीना बहाना हो तो पसीना बहाएंगे। हम और आप सब सिपाही हैं और हम अपने देश की रक्षा में, देश को ऊंचा करने में, मनुष्य जाति को ऊंचा करने में, हम पीछे नहीं रहेंगे, बल्कि
~~हम निश्चय करेंगे हम बढ़ेंगे। तो आप सबको फिर से इस युग दिवस की~~

आप सब भारत के सिपाही हैं और हमको निर्णय करना है कि कठिनाई आये तो ~~कठिनाई~~, खून बहाना हो तो खून बहायेंगे, पसीना बहाना हो तो पसीना बहायेंगे । हम और आप सब आज सिपाही हैं और हम अपने देश की रक्षा में देश को ऊंचा करने में, मनुष्य जाति को ऊंचा करने में, हम पीछे नहीं रहेंगे बल्कि सब से आगे हम बढ़ेंगे । तो आप सब को फिर से इस शुभ दिन की मैं शुभकामनाएं देती हूं और यही आशा करती हूं कि एक साल में बहुत कुछ हुआ लेकिन आगे साल में बहुत कुछ और करना है । आपके साथ और सहयोग से उसको हम करेंगे और तेजी से आगे बढ़ेंगे । मेरे साथ मिल के आप सब जयहिन्द का नारा बोलियेगा । जयहिन्द-जयहिन्द (तीन बार)

धन्यवाद